to western Orissa, have to cover first West Bengal, second Bihar and third Madhya Pradesh and after 12 hours they would reach western Orissa. So there is no railway line between western Orissa and coastal Orissa which is connecting the hinterland in between. The work on this project is going on at a slow pace and if the work goes at this rate, it will take at least three Five Year Plans to complete this project.

Madam, I urge the Government that in order to develop the State and in order to provide employment to a large number of Adivasi labourers in western Orissa, they must complete these two projects immediately so that Paradip port which is now being considered as a dead port can be developed very soon. Thank you.

SHRI BAIKUNTHA NATH SAHU (Orissa) Madam, I associate myself with the special mention made by my hon. colleague.

Need to save Taj Mahal from Pollution

श्री मीर्जा इर्शादबेग (गुजरात) : माननीया उपसभापति महोदया, सबसे पहले मैं आपका आभारी हूं कि आपने कल जो मेरा स्पेशल मेंशन अधूरा रह गया था उसको पूरा करने के लिए समय दिया है। विश्व विख्यात ताजमहल के विषय में कई शायराना अन्दाज में बातें हुई हैं। शकील बदायूनी ने इसे यों कहा कि इक शहनशाह ने बनवा के हंसी ताजमहल, सारी दुनिया को मुहब्बत की निशानी दी है। लेकिन यह मुहब्बत, इश्क, प्यार की एक अप्रतिम कलाकृति आज प्रदूषण में ग्रसित हो रही है। मैं जिस भावना को लेकर यहां पर उपस्थित हुआ हूं इस पर हमारे ही माननीय सदस्य श्री बेकल उत्साही जी भी आज आपको सम्बद्ध करते हैं और वे यों कहते हैं कि "हर एक ओर से प्रदूषण का ही मंजर है, इक यादगारे मुहब्बत को बचाया जाए", यहां भी प्रदूषण फैलाते रहे हैं कुछ लोग।

हर एक ओर से प्रदूषण का ही मंजर है,
इक यादगारे मुहब्बत को बचाया जाए,
जो एशिया की चमक है, हिन्द की जवानी है,
चिराग ताजमहल न बुझाया जाए।

मैं आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह करना चाहता हूं कि इस प्रदूषण का ताजमहल पर जो असर हो रहा है इसके बारे में सोच विचार किया जाए। अभी एक खबर हिन्दुस्तान टाइम्स समाचार पत्र में 10 जुलाई, को छपी थी। उसमें प्रदूषण के संबंध में जो वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। उस विश्लेषण में वैज्ञानिकों ने यह कहा है कि सल्फर डाइआक्साइड और नाइट्रोजन आक्साइड के संबंध में उसकी मात्रा तथा उसकी एअर क्वालिटी स्टेंडर्ड को ताजमहल के संबंध में जांचा नहीं गया है और वैज्ञानिकों के अनुसार ताजमहल के संगमरमर के संबंध में सल्फर-डाइआक्साइड तथा नाइट्रोजन आक्साइड की मात्रा ७० माइक्रो ग्राम पर क्युबिक मीटर जिसे एम० सी० एम० कहते हैं उससे अधिक नहीं बढ़नी चाहिये तथा सस्पेंडेड पार्टीकुलर पर मीटर जिसे वैज्ञानिक भाषा में एस० पी० एम० कहते हैं वह 100 एम० सी० एम० से कम नहीं होनी चाहिये। अभी सल्फर, नाइट्रोजन तथा कारबन की सेफ अक्सपोजर लिमिट का सामूहिक तथा वैयक्तिक असर एस० पी० एम० की मौजूदगी में क्या है यह जाना जाना अभी बकाया है। पर्यावरण के प्रदूषणविदों का यह कहना है कि आगरा के वातावरण में एस० पी० एम० की मौजूदगी नैसर्गिक रचना है और जब हवा गति मर्यादा से आगे बढ़ती है तब एस० पी० एम० का कार्य पोल्यूशन एक्शन में बदल जाता है। यह वैज्ञानिक तथ्य बताते हैं कि रसायनिक प्रक्रिया के प्रदूषण से एस० पी० एम० अधिक होने से ताजमहल के पत्थरों को नुकसान पहुंचता है। इसलिए इसके एटमोसफेयरिक पोल्यूशन के असर के संबंध में गहन जांच आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि क्रिटिकल रिलेटिव ह्युमिडिटी जिसे विज्ञान की भाषा में सी० आर० एच० कहते हैं सल्फर आक्साइड तथा नाइट्रोजन के संबंध में

[श्री मीर्जा इर्शादबेग]

का है इसका तीव्र होना चाहिये क्योंकि सो० आर० एच० एक रंगीन गाइडेन्स लेयर है। वातावरण में सो० आर० एच० लेयर नीचे है, तब तो एअर पोल्यूटेंट्स का एक्सपोजर लगभग या नहीं के बराबर रहता है। जब यह सो० आर० एच० की मात्रा बढ़ती है तो कोरोजन की गति अधिक बढ़ जाती है। एक वैज्ञानिक उपकरण है जिसे एटमोस फेरिक कोरोजन मीटर कहा जाता है आज तक इसका उपयोग ताजमहल के संबंध में नहीं किया गया है यह भी दोषारोपण वैज्ञानिकों की तरफ से है। इसलिए नेशनल लेबोरेटरी तथा अन्य जांच माध्यमों से इसकी जांच करवाना आवश्यक है कि हमारी यह अप्रतिम कलाकृतियां वातावरण के प्रदूषण से प्रभावी हैं या नहीं। भारत की 3516 से अधिक प्राचीन रक्षित इमारतें है जिनको यूनेस्को द्वारा विश्व स्तर पर मूल्यवान संरक्षित करार दिया गया है भारत की इन महान शिल्पकलाकृतियों, ताजमहल, इलोरा, अजंता, इलीफेंटा तथा अन्य इमारतों हमारी इन महान प्राचीन धरोहरों को रक्षित करने के संबंध में तथा प्रदूषण के असर से मुक्त रखने के संबंध में आपके माध्यम से यह मांग करूंगा कि एक मास्टर-प्लान बनाना आवश्यक है।

महोदय, औद्योगिक विकास शुदा, विकासशील राष्ट्रों के साथ जागें, औद्योगीकरण के लिए यह नितांत आवश्यक है। किन्तु महोदया, शहनशाह शाहजहां की विश्व विख्यात इमारत के संबंध में विशेष रूप से देखा जाना चाहिए कि उसके अंदर गंभीर क्षतियां तो नहीं हुई है? इधर मथुरा रिफाइनरी डालकर तथा आगरा-मथुरा के बीच में औद्योगिक एककों का जाल फैलाकर वहां के वातावरण में प्रदूषण फैलाया है, जो कि इस इमारत के सफेद संगमरमर को पीला कर रहा है और पत्थरों पर इरोजन हो रहा है। सरकारी जवाब उसके संबंध में यह रहा कि फाउण्डरीज वगैरह को इस विस्तार से हटाया नहीं जा सकता। किन्तु, महोदय ऐसे बड़े औद्योगिक एककों को एफ०सी०डी० जैसी प्रदूषण निवारक संयंत्रों की बहुत आवश्यकता है और ऐसे संयंत्र वहां लगाए जाने चाहिएं?

महोदया, इस से यह पूरा सदन और पूरा देश चिंतित है कि विश्व में अप्रतिम कही जा सकने वाली यह एक इमारत है और जिसके लिए सरकारी सूत्रों से कहा जाता है कि इस पर कोई प्रदूषण नहीं है या इरोजन नहीं हो रहा है, जबकि हमारे कुछ वैज्ञानिकों का विश्लेषण यह रहा है कि इस पर ईरोजन हो रहा है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह मांग करूंगा कि इसकी सही जांच होनी चाहिए और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसके तमाम पहलुओं पर जांच करके सही कदम उठाए जायें। धन्यवाद।

श्री विट्ठलराव पांडुरंग जाधव: (महाराष्ट्र): मैडम डिप्टी चेयरमेन अभी मेरे मित्र मीर्जा इर्शादबेग ने जो सवाल उठाया है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। ताजमहल हमारे देश का ही नहीं बल्कि दुनियां का एक भूषण है। यह दुनियां में नाइंथ वंडर है। ताजमहल का खराब होना, इसका मतलब है कि जो हमारे देश की एक बहुत बड़ी शान और गौरव है, उसको हानि पहुंचाना, क्षति पहुंचाना। इसके साथ-साथ मैं यह भी बताना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश में अजन्ता और एलोरा की जो केव्ज हैं, इंटरनेशनल फेम की; उसकी भी आज वही हालत होने जा रही है। तो ताजमहल सहित, जो भी हमारे ट्यूरिस्ट स्पोट अच्छे हैं, जिन्हें दुनियां से लोग देखते आते हैं, उनको सरकार द्वारा खास संरक्षण दिया जाय और उनकी अच्छी देखभाल की जाय। अगर हमारे यह जो ओल्ड हेरीटेज है, ओल्ड रिच कल्चरल हेरीटेज है, उनकी सुरक्षा का यत्न होगा तो हमारे देश का एक अच्छा नाम दुनियां में हो जाएगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने मित्र श्री मीर्जा इर्शाद बेग के इस उल्लेख का समर्थन करता हूं।

उपसभापति : आपके साथ चेयर भी एसोसिएट करती है । पूरा हाऊस एसोसिएट करता है ।

The whole House, including the Chair, is associating. The Minister for Science and Technology is here and the Minister of State for Parliamentary Affairs is here. The Scientific part, I think, the Ministry should look after and it should be conveyed to the Minister for Environment.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF WATER RESOURCES AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M.M. JACOB) : It is a very imprtant matter. Certainly it will be conveyed.

SHRI MIRZA IRSHADBAIG : Madam, I am very much thankful to you.

..

Infiltration of terrorists into India from Pakistan

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry) : Madam, I thank you very much for having given me this opportunity to raise the issue of terrorits still entering into Indian border from Pakistan.

Madam, we have been, time and again, bringing it to the notice of the House that terrorists from Punjab and Kashmir cross over to Pakistan, get full-fledged training by the Pakistan administration and get pushed back to India to create law and order problems and also to act against the interests of India. Now there is concrete evidence available with the Government of India that the Pakistan administration has not only given training to terrorists but in three places, in the border areas of Amritsar, Taran Taran and Ferozepur, has pushed them into Indian borders for the purpose of creating law and order problems, especially in Punjab. Madam, the information came to the Government of India when they intercepted wireless messages which they passed on from the Field Intelligence Unit of Pakistan and also the ISI of Pakistan. The strategy adopted by the Pakistan border police is that they send the terrorists across the border to India and while sending them, the Pakistan rangers give them protective cover so that they can enter into Indian border, deep into the areas of Amritsar, Ferozepur and Taran Taran. The important fact is that the Prime Minister of Pakistan, Mrs. Benazir, told our Prime Minister during his recent visit there, that they are not aiding and helping the terrorists. But this evidence which has been intercepted shows that on 12th and 13th of July 1989 Pakistani army gave protection to the terrorists and supplied them with rockets, SLRs and AK47 rifles so that they can enter into the Indian border and kill Indians both in Punjab and in Kashmir areas. I would like the House to note that Pakistan Government's assurance is only a farce because the incidents that are taking place on the Indo-Pak border are contrary to the assurance given by Pakistan administration. In the encounter that took place in all these three areas, out of 15 people who were sent over to the Indian side of the border, when the Indian BSF encountered them, three of the terrorists died and large quantities of weapons were recovered from them. The terrorists, apart from entering the Indian border, also bring in sophisticated weapons from Pakistan. They supply these weapons to tne terrorists inside our country for creating law and order problem in Punjab. I therefore